Current Affairs Of The Day (August 3, 2019)

वर्तमान में चर्चित विभिन्न अवधारणाएं

कला एवं संस्कृति

गुरूवायुर मंदिर

केरल के गुरूवायुर में स्थित गुरूवायुर मंदिर बाल गोपाल श्रीकृष्ण का प्रसिद्ध हिन्दू में से एक है। ये भारत सबसे प्राचीन मंदिरों में से एक है। यहाँ भगवान की पूजा गुरूवायुरप्पन के रूप में की जाती है। मंदिर में भगवान के दस अवतारों का भी वर्णन किया गया है।

गुरूवायुर मंदिर के बारे में प्रमुख तथ्य :

- गुरू का अर्थ है देवगुरू बृहस्पति, वायु का मतलब है भगवान वायुदेव और ऊर एक मलयालम शब्द है, जिसका अर्थ होता है भूमि। इस लिए इस शब्द का पूरा अर्थ है– जिस भूमि पर देवगुरू बृहस्पति ने वायु की सहायता से स्थापना की।
- गुरूवायुर नगर और भगवान गुरूवायुरप्पन के बारे में एक पौराणिक कथा प्रचलित है। कहा जाता है कि कलयुग की शुरूआत में गुरू बृहस्पति और वायुदेव को भगवान कृष्ण की एक मूर्ति मिली थी। मानव कल्याण के लिए वायुदेव और गुरू बृहस्पति ने एक मंदिर में इसकी स्थापना और इन दोनों के नाम पर ही भगवान का नाम गुरूवायुरप्पन और नगर का नाम गुरूवायुर पड़ा।
- मान्यता के अनुसार कलयुग से पहले द्वापर युग के दौरान यह मूर्ति श्रीकृष्ण के समय में भी मौजूद थी।
- गुरूवायुरप्पन मंदिर में भगवान कृष्ण की चार हाथों वाली मूर्ति है, जिसमें भगवान ने एक हाथ में शंख, दूसरे में सुदर्शन चक्र और तीसरे हाथ में कमल पुष्प और चौथे हाथ में गदा धारण किया हुआ है।
- इस मंदिर में शानदार चित्रकारी की गई है, जो कृष्ण की बाल लीलाओं को प्रस्तुत करती है।
- इस मंदिर को 'भूलोक वैकुंठम' के नाम से भी जाना जाता है, जिसका अर्थ है धरती पर वैकुण्ठ लोक।
- गुरूवायुरप्पन मंदिर को दक्षिण की द्वारिका के नाम से जाना जाता है। मंदिर 5000 साल पुराना है और 1638 में इसके कुछ हिस्से का पुनर्निर्माण किया गया था।

गुरूवायुरप्पन मंदिर की विशेषता :

- इस मंदिर की सबसे बड़ी विशेषता यह कि इसका रिश्ता केवल धर्म-कर्म और पूजा-पाठ से ही नहीं, बल्कि कला और साहित्य से भी है।
- ये मंदिर प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य कला कथकली के विकास में सहायक रही विधा कृष्णनट्टम कली, जो कि नाट्य-नृत्य कला का एक रूप है, उसका प्रमुख केन्द्र है।
- गुरुवायुर मन्दिर प्रशासन जो गुरुवायुर देवास्वोम कहलाता है, एक कृष्णनट्टम संस्थान का संचालन करता है।

अम्बुबाची मेला :

- हर साल असम की राजधानी गुवाहाटी के कामाख्या देवी मन्दिर में 22 से 26 जून तक पाँच दिवसीय अम्बूबाची मेला आयोजित होता है।
- कामाख्या देवी मन्दिर देश के 52 शक्तिपीठों में से एक है।
- इस प्राचीन मन्दिर में देवी सती या माँ दुर्गा की मूर्ति नहीं है।
- श्रीमद् देवी पुराण और शक्तिपीठांक में बताया गया है कि इस जगह पर देवी सती का योनि भाग गिरा था।

- अम्बूबाची पर्व के दौरान मन्दिर के गर्भ गृह में पूजा-अर्चना बन्द रहती है।
- मान्यता है कि इस समय में देवी सती रजस्वला में रहती हैं। इस वजह से मन्दिर का पट 22 जून से 26 जून तक बन्द रहता है और ब्रह्मपुत्र नदी का जल भी लाल हो जाता है।
- यहाँ कन्या पूजन करने की भी परम्परा है ये मन्दिर तंत्र का विशेष स्थान है और तांत्रिकों के लिए अम्बूबाची का समय सिद्धि प्राप्ति का अनमोल समय होता है, इसीलिए यहाँ देशभर से बड़ी संख्या में तांत्रिक आते हैं।

यक्षगान :

- यक्षगान कर्नाटक की प्रचलित लोक कलाओं में प्रमुख है, यह गीत नृत्य का एक सम्मिश्रित प्रकार है।
- पूरे कर्नाटक में प्रचलित इस यक्षगान के अनेक रूप हैं।
- पूर्व कर्नाटक की है में जिस यक्षगान का प्रचलन है, उसे मूडलपाय कहते हैं और पश्चिम के यक्षगान को पडवलपाय।
- इनमें भी अनेक उपभेद है। पडवलपाय में तटीय प्रदेश का यक्षगान बहुत ही परिष्कृत और परिनिष्ठित है। इसे तैकुतिट्टु अर्थात् दक्षिण शैली और बड़वुतिट्टु अर्थात् पश्चिम शैली नामक दो शैलियों में बाँटा गया है।
- यक्षगान भारत की रंग कलाओं का एक विशिष्ट प्रकार है। यह एक पूर्ण कला है। पाँचों ललित कलाओं का संगम है। यक्षगान में संगीत है, नृत्य है, नाटक है, शिल्प कला है और चित्रकला है।
- शास्त्रीय संगीत से भिन्न गीत प्रकार यक्षगान में हैं। रागों और तालों के नाम कर्नाटक शैली अर्थात् शिष्ट संगीत के राग और ताल से मिलते हैं, लेकिन इनकी शैली बिल्कुल अलग है।
- देशी ढंग से गीतों को गाया जाता है. गायन के द्वारा एक लम्बी कथा की प्रस्तुति होती है. यहाँ रागों का अलापना मुख्य न होकर काव्य सुनाना उद्देश्य होता है।
- मद्दले नाम का मृदंग का ही एक रूप और चेण्डे गायन का साथ देते है। ये गायन से ज्यादा नृत्य के पूरक है।
- यक्षगान की अपनी एक अलग नृत्य क परम्परा है. विभिन्न रसों की अभिव्यक्ति के लिए अनुकूल नृत्य शैली है, नृत्य के साथ अभिनय भी होता है।
- काव्यांश जो गायन ही द्वारा प्रस्तुत किया जा रहा है, उसके अनुकूल विभिन्न पात्र मंच पर नृत्य के साथ अभिनय करते हैं। कथ्य को अंगाभिनय द्वार सफलतापूर्वक व्यक्त किया जाता है।
- चेण्डे एक चर्मवाद्य है, जो वीर रस का अभिव्यक्ति के लिए उत्तम माध्यम है, इसकी गति के साथ कलाकार तीव्रगति में चक्राकार नाचते हुए वीर रस की अभिव्यक्ति करते हैं।
- गायन में कथा का एक छोटा सा अंश प्रस्तुत जाता है, जिसके लिए विभिन्न पौराणिक पात्रधारी कलाकार नृत्याभिनय कर पात्र प्रायः पौराणिक होते हैं।
- विभिन्न पौराणिक कथानकों को प्रस्तुत किया जाता है, ये पौराणिक पुरूष सामान्य मनुष्य से अलग है।